[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3249 **E**

Unique Paper Code : 62051412

Name of the Paper : Hindi Language and Literature

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi-B-CBCS**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

छात्रों के लिए निर्देश

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

   इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **All** questions are compulsory.

   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कहानी के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए।

अथवा

P.T.O.

संस्मरण के विकासक्रम का सामान्य परिचय दीजिए। (12)

2. 'चीफ की दावत' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कहानी कला की दृष्टि से 'बूढ़ी काकी' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

3. धर्मवीर भारती कृत 'ठेले पर हिमालय' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

अथवा

'सदाचार का ताबीज' निबंध में वर्णित व्यंग्य की विवेचना कीजिए। (12)

4. 'बिबिया' में चित्रित स्त्री समस्या पर प्रकाश डालिए।

अथवा

प्रहसन और व्यंग्य की दृष्टि से 'अंधेर नगरी' की समीक्षा कीजिए। (12)

5. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए :- (10 + 10)

(क) रात के ग्यारह बज चुके थे। रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी। लाड़ली की आँखों में नींद न आती थी। काकी को पूरियाँ खिलाने

की खुशी उसे सोने न देती थी। उसने गुड़ियों की पिटारी सामने ही रखी थी। जब उसे विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही है, तो वह चुपके से उठी और विचारने लगी–कैसे चलूँ? चारों ओर अंधेरा था। केवल चूल्हों में आग चमक रही थी और चूल्हों के पास एक कुत्ता लेटा हुआ था।

अथवा

पच्चीस वर्ष बीत गए। अब लहना सिंह नं. 77 राइफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान भी न रहा। न मालूम वह कभी मिली थी, या नहीं। सात दिन की छुट्टी लेकर ज़मीन के मुकदमे की पैरवी करने वह अपने घर गया। वहाँ रेजीमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधसिंह भी लाम पर जाते हैं। लौटते हुए हमारे घर होते जाना। साथ चलेंगे । सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था।

(ख) आज से पचास साल पहले रेल कहाँ थी। मैंने मारवाड़ से मिरजापुर तक और मिरजापुर से रानीगंज तक कितने ही फेरे किए हैं। महीनों तुम्हारे पिता के पिता तथा उनके भी पिताओं का घर–बार मेरी ही पीठ पर रहता था। जिन स्त्रियों ने तुम्हारे बाप और बाप के भी बाप को जना है वह सदा मेरी पीठ को ही पालकी समझती थीं। मारवाड़ में मैं सदा तुम्हारे द्वार पर हाजिर रहता था, पर यहाँ वह मौका कहाँ?

अथवा

कोकिल बायस एक सम, पण्डित मूरख एक।
इन्द्रायन दाड़िम विषय, जहाँ न नेकु विवेक॥
बसिए ऐसे देस नहिं, कनक-वृष्टि जो होय।
रहिए तो दुख पाइए, प्रान दीजिए रोय॥

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :- (7)

(क) शुक्लयुगीन निबंध

(ख) भारतेन्दु युग और नाटक विधा

(ग) प्रेमचन्द युगीन कहानी